RANIGANJ GIRLS' COLLEGE

HINDI DEPARTMENT

DIGITAL WALL MAGAZINE

POCO
T ON POCO F1

रघुवीर सहाय
जीवन काल – 1929 – 1990

विषय-सूची

Section	Slide number
❖ रघुवीर सहाय की जीवनी और कृतित्व	5-9
❖ रघुवीर सहाय की कविताओं की विशेषताएँ	10-14
❖ रघुवीर सहाय की कहानियाँ और उनका उद्देश्य	15-18
❖ रघुवीर सहाय के निबंध-संग्रह और उनका उद्देश्य	19-21

रघुवीर सहाय की जीवनी और कृतित्व

जन्म :- रघुवीर सहाय का जन्म 9 दिसम्बर 1929 ई० को लखनऊ (उत्तर प्रदेश) में हुआ।

शिक्षा :- रघुवीर सहाय की सम्पूर्ण शिक्षा लखनऊ में हुई। वहीं से उन्होंने 1951 में अंग्रेजी साहित्य में एम० ए० किया।

कार्य :- रघुवीर सहाय आरम्भ में 'प्रतीक' में सहायक सम्पादक के रूप में काम करते थे। फिर वे आकाशवाणी के समाचार विभाग में असम्पादक रहे। रघुवीर सहाय 'नव-भारत टाइम्स', दिल्ली में भी विशेष संवाददाता रहे। 'दिनमान' पत्रिका में 1969 से 1982 तक के अंक में प्रधान सम्पादक रहे। उन्होंने 1982 से 1990 तक स्वतंत्र लेखन किया। रघुवीर सहाय कवि, पत्रकार, रचनाकार, कथाकार, निबंधकार एवं आलोचक भी थे।

Shot on Y19

साहित्यिक कृतियां

काव्य-संग्रह: 'सीढ़ियों पर धूप में' (1960)
'आत्महत्या के विरुद्ध' (1967)
'लोग भूल गये हैं' (1982)
'हँसो-हँसो जल्दी हँसो' (1947)
'कुछ पते कुछ चिठ्ठियाँ'
'एक समय था'।

कविताएँ: 'अखबार वाला', 'अरे अब ऐसी-कविता लिखो', 'अधिनायक', 'दुनिया', 'पढ़िए गीता', 'नशे में-दया', 'बसंत', 'बसंत आया', 'लोकतंत्र का संकट', 'पराजय के बाद', 'औरत की जिन्दगी', 'आनेवाला खतरा', 'इतने शब्द कहाँ हैं', इत्यादि)

कहानी-संग्रह: 'सीढ़ियों पर धूप में' (1960)
'रास्ता इधर से है' (1962)
'जो आदमी हम बना रहे हैं' (1982)

ot on Y19

कहानियाँ : 'उमस के बाहर', 'खेल', 'कीर्तन', 'रास्ता इधर से है', 'लड़के', 'कोठरी', 'सर्कस', 'प्रेमिका', 'मुठभेड़', 'इन्द्र-धनुष', तीन 'मिनट', 'विजेता', 'कहानी की कला', 'सेन', 'एक चीता', 'जागता व्यक्ति', 'मुक्ति का एक क्षण'।

निबंध - संग्रह : "सीढ़ियों पर धूप में" (1960)
"दिल्ली मेरा परदेश" (1976)
"लिखने का कारण" (1978)
"ऊबे हुए सुखी" (1983)
"वे और नहीं होंगे जो मारे जायेंगे" (1983)
"भँवर, लहरें और तरंग" (1989)
"यथार्थ यथास्थिति नहीं" (1984)
"अर्थात" (1994)।

Shot on Y19

उपन्यास :- 'कोठरी की कैद' (1976)
'बारह खम्भा', 'नींद'।

नाटक :- 'अँधेरा' (1950)
'मन की बात' (1951)
'सुख के लिए' (1951)।

बालसाहित्य :- बच्चों को भी नाटक चाहिए (1951)
बालसाहित्य में कविता, कहानी, नाटक, रूपक, संलाप आदि लिखें। सन् 1946 से 1950 के बीचलखनऊ रेडियो से प्रकाशित हुई।

पुरस्कार / सम्मान :-

- हिन्दी संस्थान द्वारा 2000 रु० का सम्मान (1972)
- कविता संग्रह 'हँसो - हँसो जल्दी हँसो' के लिए ढाई हजार रु० का सम्मान (1976-77)।

- हिन्दी संस्थान द्वारा निबंध टिप्पणियों को
- 'दिल्ली मेरा परदेश' के लिए 3000 रु० का सम्मान (1977-78)
- मरणोपरांत हंगरी सरकार का सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार (8 अप्रैल)
- मरणोपरांत बिहार राजसभा विभाग द्वारा एक लाख रु० का राजेन्द्र प्रसाद शिखर सम्मान (30 दिसम्बर 1992)।
- कविता-संग्रह "लोग भूल गए हैं" पर साहित्य अकादमी पुरस्कार (1982)।

निधन :- रघुवीर सहाय का निधन 30 दिसम्बर 1990 को नई दिल्ली में हुआ।

रघुवीर सहाय की कविताओं की विशेषताएँ

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में रघुवीर सहाय का नाम अविस्मरणीय है। उनकी कविताओं में सामाजिक यथार्थ के प्रति अद्भुत बानगी देखी जा सकती है। रघुवीर सहाय की कविताओं में मानवीय संवेदनाओं के साथ-साथ मानव के संघर्ष का यथार्थ दिखाई पड़ता है।

रघुवीर सहाय ने सशक्त ढंग से सामाजिक दुराचारों का चित्रण किया है। अभी तक उनके छह काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जो इस प्रकार हैं—

- सीढ़ियों पर धूप में — (1960)
- आत्महत्या के विरुद्ध — (1967)
- हँसो हँसो जल्दी हँसो — (1978)
- लोग भूल गये हैं — (1982)
- कुछ पत्ते कुछ चिट्ठियाँ — (1989)
- एक समय था — (1995)

रघुवीर सहाय की कविताओं में मानवीय मूल्यों का यथार्थ अंकन हुआ है। 'दूसरा सप्तक' में संकलित उनकी कविताएँ कई समस्याओं को उजागर कर सामाजिक यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति करती है। इसी तरह 'सीढ़ियों पर धूप में' हो या फिर 'आत्महत्या के विरुद्ध' संग्रह की कविताएँ सामाजिक विडंबनाओं का कच्चा चिट्ठा प्रस्तुत करती हैं। इन संग्रहों की कविताओं में वास्तविक जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है।

'हँसो हँसो जल्दी हँसो' और 'लोग भूल गए हैं' संग्रह की कविताओं में नारी समस्या समाज की पतन हो चुकी अवस्था, गरीबों की लाचारी, पाश्चात्य सभ्यता के मोह में भारतीय संस्कृति एवं जीवन मूल्यों की उपेक्षा करने की प्रवृत्ति और समाज में बढ़ रहे उपभोक्तावादी दृष्टिकोण का कच्चा चिट्ठा उन्होंने प्रस्तुत किया है। इसी तरह 'कुछ पत्ते कुछ चिट्ठियाँ' और 'एक समय था' संग्रहों में मानवीय संबंधों का सुंदर चित्रण एवं व्यक्ति के आंतरिक जीवन का अंकन अद्भुत ढंग से

हुआ है।

रघुवीर सहाय की कविताओं में मजदूरों के प्रति सहानुभूति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। इनके शब्दों की कविताएँ एक से बढ़कर एक हैं। ये कविताएँ शोषण का अंत करने के लिए हुंकार भरती है और 'अखबार वाला' कविता में कवि कहते हैं –

"राजधानी से कोई कस्बा दोपहर बाद
छटपटाता है
एक फटा कोट एक हिलती चौकी एक लालटेल
दोनों बाप मिस्त्री और बीस बरस का
नरेन
दोनों पहले से जानते हैं पेंच की
मरी हुई चूड़िया
नेहरी युग की औजारों को मुसद्दीलाल की
सबसे बड़ी देन।"

रघुवीर सहाय की कविताओं में मानव जीवन की श्रेष्ठता का प्रतिपादन हुआ है। वे मानते हैं कि मनुष्य में बहुत शक्ति भी है। यही नहीं जीवन की कठिनाइयों का सामना करने की शक्ति भी

उसमें है। मनुष्य में त्याग और बलिदान करने की भावना है। वे कहते हैं-

"वह मानव जिसमें पत्थर की सी क्षमता है,
चुपचाप थपेड़ों को सह लेने की ताकत
लेकिन मिट्टी सा घुल जाने की भी आदत
इसलिए लहर की अधिक इसी में
ममता है।"

रघुवीर सहाय का मानना है कि व्यक्ति को अपनी शक्ति पहचानने की क्षमता होनी चाहिए। जीवन में उतार - चढ़ाव आते रहते हैं, किन्तु अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कभी भी उसे हार नहीं मानना चाहिए। मूल्यों में आस्था व्यक्ति को शक्ति प्रदान करती है। इसलिए वे अपनी कविता 'हमने यह देखा' में कहते हैं -

"जब ठौर नहीं मिलता है कोई दिल को
हम जो पाते हैं उस पर लुट जाते हैं
क्या यही पहुँचना होता मंजिल को?
हमको तो अपने हक सब मिलने चाहिए
हम तो सारा का सारा लेंगे जीवन
'कम से कम' वाली बात न हमसे कहिए।"

रघुवीर सहाय मानते हैं कि समाज में किसानों को आदर मिलना चाहिए। दिन-रात जो परिश्रम करता है, पूरे संसार का पेट भरता है यदि उनकी समस्याएँ समाप्त नहीं होंगी तो राष्ट्र कैसे उन्नति कर सकता है। वे अपनी कविता में लिखते हैं—

"त्यागी है और तापसी है मजदूर महान है
देश का दुलारा है और भारत की शान है
और ये किसान तो जाने भगवान है
फिर ना दुखाना भाई किसी का जमाने में।"

रघुवीर सहाय की कविताओं में युगीन प्रवेश का सूक्ष्म निरीक्षण दिखाई देता है। उन्होंने विघटित हो रहे मानव मूल्यों को समीप से देखा। इसी कारण उनकी कविताओं में छोटी-छोटी समस्याओं की जीवंत अभिव्यक्ति हुई है। कहना अनुचित नहीं होगा कि रघुवीर सहाय के जैसा कोई दूसरा नहीं है। उन्होंने जो देखा उसका चित्रण आमिक ढंग से और अपने अनुभव के माध्यम से प्रकट किया।

रघुवीर सहाय की कहानियाँ और उनका उद्देश्य

रघुवीर सहाय ने कुल मिलाकर छह कहानियाँ लिखी हैं। उनकी कहानियाँ पारम्परिक साँचे में ढली कहानियों से थोड़ी हटकर हैं। उन्होंने कहानियों में रचना विधान से लेकर उद्देश्य तक के स्तरों में नये-नये प्रयोग किये हैं। उनकी अधिकतर कहानियों का उद्देश्य राजनीति, राष्ट्र, महिलाओं, शोषितों, पीड़ितों, सामाजिक सम्बन्धों एवं जन समस्याओं सम्बन्धी विषयों की प्रस्तुति को विशेष स्थान दिया है। रघुवीर सहाय की कहानियों में छोटी-छोटी चीजों को भी स्थान मिला है। उन्होंने भूख, कुण्ठा, रोटी से लेकर सीपड़ी, आग तथा संस्कृत जैसे शब्दों का उल्लेख किया है। नगर तथा दैनिक जीवन में प्रयोग किये जा रहे छोटे-छोटे शब्दों का जीवन्त चित्रण किया है। उनके अभी तक तीन कहानी-संग्रह निकल चुके हैं, जो इस प्रकार हैं—

(i) 'सीढ़ियों पर धूप में' (1960)
(ii) 'रास्ता इधर से है' (1962)
(iii) 'जो आदमी हम बना रहे हैं' (1982)

'रघुवीर सहाय' के इन तीनों संग्रह में कई कहानियाँ संकलित हैं जिसने समाज को एक आईना दिखाया है।

इन संग्रहों में कुछ कहानियों को हम इस प्रकार देख सकते हैं :-

खेल :- यह कहानी बाल मनोविज्ञान पर केन्द्रित है। इस कहानी के माध्यम से रघुवीर सहाय ने एक बालक की मानसिक अवस्था का सशक्त चित्रण किया है। इस कहानी में एक बालक को लकड़ी के छोटे टुकड़े के साथ खेलते हुए दिखाया है। बालक खेल-खेल में ही अपने कलात्मक समाज को एक संदेश देती है।

इन्द्रधनुष :- इस कहानी में रघुवीर सहाय ने जीवन के इन्द्रधनुष रंगों को पिरोया है। यह कहानी आत्मलाप शैली में लिखी गई है। अर्थात लेखक ने मानव मन की भावनाओं को, विचारों को इन्द्रधनुषी रंगों में व्यक्त किया है। मानव की विचार धारायें प्रत्येक-क्षण बदलती है। प्रत्येक क्षण मानव अपनी विचार-धाराओं के साथ बदलता है और जीवन को नये-नये ढंग से जीने की सोचता है। इस कहानी का उद्देश्य यही है कि मनुष्य की अभिलाषाएँ कभी मरती नहीं है। मानव है तो जीजीविषा भी होगी और जीजीविषा है तो मनुष्य की इच्छायें भी रहेंगी।

मुठभेड़ :- मुठभेड़ कहानी में आज के जीवन में बढ़ती हुई मानवीय सम्बंधो की दूरी को दिखाया गया है। आज सम्बंध टूट रहे हैं। प्रत्येक घर के भीतर दरार है। एक इंसान दूसरे इंसान पर विश्वास नहीं करता है। प्रत्येक इंसान के हृदय में ना जाने कैसा भय समाया हुआ है? इसी भय की जीवन्त अभिव्यक्ति मुठभेड़ कहानी में हुई है, तथा मानवीय सम्बंधो की दूरी को यथार्थ रूप में यहाँ दिखाया गया है।

एक भगोड़े की आत्मकथा :— इस कहानी को रघुवीर सहाय आत्मकथा रूप में प्रस्तुत करते हैं। फुटपाथ पर एक औरत बेहोश पड़ी है और कहानीकार असमंजस की स्थिति में है कि उसकी सहायता करें की ना करे। अंत: वह उस औरत की सहायता करता है। औरत प्रसन्न होकर उसे एक कागज में अपना पता देती है, किन्तु जब कहानीकार कुछ दिन बाद उस स्थान पर पहुँचता है तब उस औरत का कोई अता-पता नहीं चलता है। यह देखकर लेखक आत्मग्लानी से भर जाता है। इस कहानी के माध्यम से लेखक बतात

करना चाहते हैं कि सहायता करके सहायता की आस नहीं करनी चाहिए। जो जैसा दिखता है वह वैसा नहीं होता है।

विदेश में भारतीय :- यह कहानी विदेश में रह रहे भारतीय की यथार्थ अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करती है। विदेश में भारतीयों की क्या स्थिति होती है, उनका रहन-सहन कैसा होता है, वे किन-किन समस्याओं से होकर गुजरते हैं, इन सब की सफल अभिव्यक्ति इस कहानी में हुई है।

कहना अनुचित नहीं होगा कि रघुवीर सहाय की कहानियाँ संवेदना के क्षणों को महसूस करती हैं। वे अपनी कहानियों में पूँजीवादी समाज का चित्रण करने के साथ-साथ शोषित जनता, शोषितों का चित्रण करते हैं।

POCO
SHOT ON POCO F1

रघुवीर सहाय के निबंध - संग्रह और उनका उद्देश्य

रघुवीर सहाय ने काव्य रचना के अतिरिक्त निबंधों की भी रचना की है। उनके निबंधों में छोटी-छोटी समस्याएँ उजागर हुई हैं। रघुवीर सहाय ने अपने निबंधों के माध्यम से उन विषयों को छुआ है जिन पर अब तक बहुत कम लिखा गया है। उनके प्रमुख निबंध-संग्रह हैं——
'दिल्ली मेरा परदेश', 'लिखने का कारण', 'ऊबे हुए सुखी', 'वे और नहीं होंगे जो मारे जाएँगे', 'भँवर लहरें और तरंग' 'यथार्थ यथा स्थिति नहीं', 'अर्थात' आदि।

इन निबंधों में से कुछ के उद्देश्यों को इस प्रकार देख सकते हैं।

दिल्ली मेरा परदेश :— यह रघुवीर सहाय की एक डायरी नुमा पुस्तक है। इस निबंध-संग्रह के माध्यम से रघुवीर सहाय दिल्ली के जीवन को प्रस्तुत करते हैं। रघुवीर सहाय ने प्रस्तुत निबंध में दिल्ली के निवासियों का सामाजिक आचरण रहन-सहन एवं सांस्कृतिक आदि विषयों को केन्द्र में रखा है, तथा यह बताने की कोशिश की है कि सवालों से टकराये बिना अपने वर्तमान को ठीक से समझा नहीं जा सकता है।

लिखने का कारण :— इस निबंध - संग्रह में रेखाचित्र, भेंटवार्ता, संस्मरण आदि विभिन्न विधाओं का प्रभाव देखने को मिलता है। इस संग्रह के संबंध में रघुवीर सहाय लिखते हैं— " प्रस्तुत पुस्तक में सन् 1951 से लेकर अब तक समय - समय पर लिखे अपने लेखों का संकलन मैंने किया है।"

इस निबंध - संग्रह में साहित्य भाषा और समाज पर लेखक ने अद्भुत व्याख्या प्रस्तुत कि है।

उठे हुए सवाल :— रघुवीर सहाय ने इस निबंध - संग्रह में भारत की राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एंव पत्रकारिता जैसी विषयों पर नए दृष्टि से मननचितंन किया है। इस निबंध-संग्रह के माध्यम से भारत के लोगों का सही रूप दिखाई देता है। वे इस रचना के माध्यम से भारत के लोगों के मन में विचारोत्तेजक स्थिति पैदा करते हैं तथा हमें भारत की यथार्थ स्थिति से अवगत भी कराते हैं।

अर्थात :— यह निबंध संग्रह रघुवीर सहाय की मृत्यु के बाद प्रकाशित हुई। इस संग्रह के लेखों में समसामयिक विचारों को जगह दि गई है। इसमें पत्रकारिता के

विषयों से संबंधित विचारों को प्रस्तुत किया गया है। इस संग्रह के लेखों के विषयों के केन्द्र में राजनीति, संस्कृति, समाज पत्रकारिता और भाषा को रखा गया है।

अपने निबंधों के माध्यम से रघुवीर सहाय ने राजनीतिक, साम्प्रदायिकता पर तीव्र प्रहार किया है।

योगदानकर्ता और संपादकीय बोर्ड

- रघुवीर सहाय की जीवनी और कृतित्व : अंजली बाल्मीकी, अंजली पासवान, गुड़िया कुमारी, सोमा सिंह (3rd Semester Hindi honours)
- रघुवीर सहाय की कविताओं की विशेषताएँ : अनीता कुमारी, सिल्की बर्मन, निकिता नोनिया (3rd Semester Hindi honours)
- रघुवीर सहाय की कहानियाँ और उनका उद्देश्य : साहिन परवीन, रिंकी कुमारी, लिशा पंडित (3rd Semester Hindi honours)
- रघुवीर सहाय के निबंध-संग्रह और उनका उद्देश्य : नंदनी कुमारी, प्रतिमा कुमारी (3rd Semester Hindi honours)

Teachers of Hindi Department

- डॉ. अनीता मिश्रा (Associate Professor)
- डॉ. जगमोहन सिंह (Assistant Professor)
- नीलम मिश्रा तिवारी (SACT)
- डॉ. कृष्णा सिंह (SACT)
- प्रियंका सिंह (SACT)
- राजेंद्र महतो (SACT)

धन्यवाद

Dhanyawad